साई चालिसा पढ़े जो कोई।
सुख हर विधि का पावे सोई।40।

जो मनुष्य इस साई चालीसा का पाठ करेगा, उसे हर प्रकार के सुख और ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी।

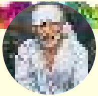

मंगलमय सुख धाम हो, करुणा के अवतार।
दान भक्ति का दो मुझे, हर लो विषय विकार।

हे साई! आप मंगलरूप सुखों के धाम परमेश्वर हैं, करुणा के अवतार हैं। कृपा कर के मुझे भक्ति का दान दीजिए और मेरे विषय विकार हर लीजिए।

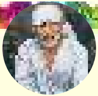

'श्री साई चालीसा' सभी साई भक्तों को सप्रेम समर्पित है। 'श्री साई चालीसा' हमारे पारिवारिक मित्र संगीत विशारद श्री एस वेंकटेश्वर राव द्वारा तेलुगु में लिखी 'श्री साई चालीसा' से प्रेरित है और मुख्यत: श्री गोविन्द रघुनाथ दाभोलकर व श्री माताजी कृष्णाप्रिया द्वारा रचित 'श्री साई सच्चरित्र' ग्रन्थों पर आधारित है। 'श्री साई चालीसा' मैंने पंडित जसराज की शिष्या सुश्री लता रानाडे और श्री माताजी कृष्णाप्रिया के शिष्य श्री एस वेंकटेश्वर राव की प्रेरणा से लिखनी आरम्भ की और बाबा की कृपा से ही यह कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हुआ है। मैं सुश्री रानाडे व राव साहब का धन्यवाद करता हूँ। साथ ही अपने बड़े भाई श्री राजेन्द्र मोहन कौशिक, अपनी धर्मपत्नी डॉ रेणु कौशिक एवं अपने मित्रों श्री अवनीश कुमार दीक्षित और श्री हैदर नज्मी माणिकपुरी के बहुमूल्य सुझावों के लिये उनका धन्यवाद करता हूँ।

मैं बाबा के परमभक्त श्री फ़ीरोज़ पेटीगरा का आभारी हूँ जिन्होंने 'श्री साई चालीसा' को छपवा कर साई भक्तों तक पहुँचाने की कृपा की है।

आशा है 'श्री साई चालीसा' आप सब को पसंद आएगी।

धन्यवाद सहित

राकेश मोहन कौशिक

प्रथम संस्करण : मार्च, 2007 © सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक: प्रिन्ट्रेड, मुम्बई 400 011

पुस्तक प्राप्ति के लिये सम्पर्क करें:

9869001689 (फ़ीरोज़भाई) 9820151005 (राकेश कौशिक)

9892836009 / 9892815391 (प्रभात बुक सेन्टर)